Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

सितम्बर/2021ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

SEPTEMBER-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

मज्लिस अंसारुल्लाह पालक्काड (केरल) द्वारा एक मक़ामी व्यक्ति को इस्लाम, अहमदिय्यत का लिटरेचर भेंट करते हुए।

मज्लिस अंसारुल्लाह पालक्काड (केरल) द्वारा आयोजित एक मीटिंग का दृश्य।

5-8-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह मोहल्ला ताहिर (क़ादियान) द्वारा मस्जिद बशारत में आयोजित तरबियती इजलास का एक दृश्य।

11-8-2021 को श्री एच शम्सुद्दीन साहब क़ाइद तरबियत मज्लिस अंसारुल्लाह भारत केरल राज्य के नाज़िमीन, जुआमा के साथ मीटिंग करते हुए।

25-8-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह मोहल्ला मसरूर (क़ादियान) द्वारा मस्जिद मसरूर में आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का एक दृश्य।

श्री तनवीर अहमद साहब नायब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह दक्षिण भारत की अध्यक्षता में फ़लकनुमा (हैदराबाद) में आयोजित स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम के अवसर पर ली गई तस्वीर।

जुलाई 2021 में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलकरा (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का एक दृश्य।

जुलाई 2021 में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलकरा (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अंसार का एक दृश्य।

15 अगस्त 2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा आयोजित तरबियती इजलास के बाद एक ग्रुप फोटो।

15 अगस्त 2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का एक दृश्य।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफ़ैल अहमद
शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 सितम्बर 2021 **Issue - 9**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - इज्तिमा का उद्देश्य सारी मानव जाति को आंहज़रत सल्लल्लाहो के झण्डे तले जमा करना है	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन नई ज़िन्दगी से मिलाने वाला अन्सारुल्लाह का केन्द्रीय सालाना इज्तिमा	6
अन्सारुल्लाह भारत के सदस्यों से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस (अ) की आशाएं , सालाना इज्तिमा भारत के पैग़ामों की रोशनी में	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا
يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

(सूर: अलमुजादल: आयत 12)

अनुवाद - हे लोगो जो ईमान लाए हो जब तुम्हें यह कहा जाए कि मज्लिसों में (दूसरों के लिए जगह खुली कर दिया करो तो खुली कर दिया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी प्रदान करेगा और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो अल्लाह उन लोगों के दर्जात बुलन्द करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और विशेष रूप से उनके जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है और अल्लाह इस से जो तुम करते हो हमेशा बाख़बर रहता है।

दर्सुल हदीस

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُقِيْمَنَّ اَحَدُكُمْ رَجُلًا مِّنْ مَّجْلِسِهٖ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيْهِ وَلٰكِنْ تَوَسَّعُوْا وَتَفَسَّحُوْا۔ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ اِذَا قَامَ لَهٗ رَجُلٌ مِّنْ مَّجْلِسِهٖ لَمْ يَجْلِسْ فِيْهِ۔ (बुखारी किताबुल इस्तेज़ान)

अनुवाद - :हज़रत इब्ने उम्र वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। तुम में से कोई किसी दूसरे को उस की जगह से इस उद्देश्य से न उठाए कि ताकि वह ख़ुद उस जगह बैठे। खुले दिल से काम लो और खुल कर बैठो। अत: इब्ने उम्र का तरीक़ा था कि जब कोई आदमी आपको जगह देने के लिए अपनी जगह से उठता तो आप उस की जगह पर न बैठते ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

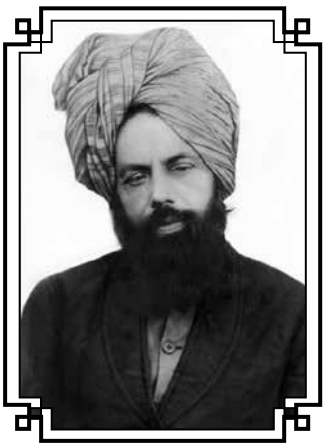

"केन्द्र में बार बार आने की आवश्यकता।

"हमारी जमाअत के लिए यह बात ज़रूरी है कि वह अपने वक़्तों में कुछ वक़्त निकाल कर आएं और यहां संगत में रह कर इस अज्ञानता को दूर करें जो ग़ैब रहने के ज़माना में पैदा हुई है और उन शंकाओं को दूर करें जो इस अज्ञानता का कारण होते हैं। उनका हक़ है कि वह उन को पेश करें और उनका जवाब हम से सुनें। भला अगर कमज़ोर बच्चा जो अभी दूध पीने और माँ की सुरक्षा का मुहताज है। इस से अलग कर दिया जाए तो तुम आशा कर सकते हो कि वह बचेगा। कभी नहीं। इसी तरह व्यस्क होने से पूर्व के कमाल और मार्फ़त का हाल है। इन्सान कमज़ोर बच्चा की तरह होता है। अल्लाह के मामूर की संगत उस के लिए आवश्यक होती है। अगर वह उस से अलग हो जाएगी , तो उस की हलाकत का भय होता है।

वास्तव में यह एक बहुत ही आवश्यक बात है। यदि ख़ुदा तआला किसी को सामर्थ्य थे और वह उस को समझ ले कि बार बार आने की कितनी आवश्यकता है। इस से यही न होगा कि वह अपने आप को लाभ पहुंचाएगा बल्कि कई दूसरों को लाभ पहुंचा सकता है, क्योंकि जब तक ख़ुद एक अनुभूति और बसीरत पैदा न होगी दूसरों को क्या मार्ग बताएगा। यही कारण होता है कि कुछ शरारत प्रकृित लोग इस तरह के आदमियों को जिन्हें बारा बार आने की आदत नहीं कोई प्रश्न करते हैं, चूंकि उन्होंने उत्तर सुने हुए नहीं होते और ख़ामोश होकर न केवल स्वंय लज्जित होते है बल्कि दूसरों के लिए जो देखने सुनने वाले होते हैं ठोकर का कारण हो जाते हैं और परिणाम यह होता है कि इस अपमान और ख़ामोशी से ईमान पर एक चोट पड़ती है। और इस में कमज़ोरी शुरू हो जाती है क्योंकि यह नियम की बात है कि जब इन्सान पराजित हो जाता है तो विजित के प्रभाव से भी प्रभावित हो जाता है कई बार उस के दिल को वह प्रभाव काला कर देता है और फिर नियम के अनुसार वह अन्धेरा बढ़ने लगता है यहां तक कि यदि उसी में उस मौत आ जाए जो वह जहन्नम में दाख़िल हो इन सारी बातों पर ध्यान दे कर एक बुद्धिमान इस नतीजा पर ज़रूर पहुंचेगा की बहुत बड़ी ज़रूरत है कि इन ज़हरों के दूर करने के लिए जो रूह को तबाह करती हैं किसी तरयाकी संगत की ज़रूरत है जहां रह कर इन्सान हलाक करने वाली बातों का ज्ञान प्राप्त करता है और मुक्ति देने वाली चीज़ों की मअरफत भी प्राप्त कर लेता है। इसी लिए एक समय से मेरे दिल में यह बात है और मैं सोचता हूं कि अपनी जमाअत की परीक्षा प्रश्नों के माध्यम से लूं। अत: मैंने इस परामर्श का कई बार वर्णन भी किया यद्यपि अभी अवसर नहीं मिला। परन्तु यह बात में दिल में हमेशा रहती है कि जो कुछ हम प्रस्तुत करते हैं उस के बारे में उन को कहां तक ज्ञान है।"

(भाग 1 पृष्ठ 479-480)

सम्पादकीय

इज्तिमा का उद्देश्य समस्त मानव जाति को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे जमा करना है।

मौजूदा माद्दी दौर में दुनिया की चकाचौंध ने बन्दों को अपने स्रष्टा से ग़ाफ़िल कर दिया है। हालाँकि अल्लाह तआला ने इन्सान के सुधार के लिए नबियों का निज़ाम शुरू किया हुआ है। हज़रत नूह की तड़प , हज़रत इब्राहीम की दिलेरी, हज़रत मूसा का नर्म बात करना , हज़रत सुलैमान का मलिका सबा को तब्लीग़ी ख़त के द्वारा तौहीद की दावत देना ,हज़रत यूसुफ़ का जेल ख़ाना में दो साथियों को अपने मालिक हक़ीक़ी का पैग़ाम पहुंचाना प्रमाणित है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दिली तड़प की गवाही ख़ुद अल्लाह तआला ने यूं वर्णन की।لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ (अश्शुअरा: 5)कि क्या तू अपनी जान को हलाकत में डाल लेगा कि ये लोग क्यों नहीं ईमान लाते। यद्यपि तब्लीग़ धर्म के मार्ग पर प्रचार करा कांटों भरा मार्ग है

दावत हर हर्ज़ा गो कुछ ख़िदमत आसां नहीं
हर क़दम पे कोहे मारां हर गुज़र पे दश्ते ख़ार

दावत इलल्लाह को सराहते हुए अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ (सूरह फ़स्सलात: 34) अर्थात और बात कहने में उस से बेहतर कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक कर्म करे और कहे कि मैं अवश्य सम्पूर्ण अज्ञाकारों में से हूँ

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

"हमारी जमाअत के सपुर्द यह काम किया गया है कि हमने सारे संसार का सुधार करना है सारी दुनिया को अल्लाह तआला के आस्ताना पर झुकाना है। सारी दुनिया को इस्लाम और अहमदियत में दाख़िल करना है सारी दुनिया में अल्लाह तआला की बादशाहत को स्थापित करना है परन्तु यह महान काम उस समय तक सरअंजाम नहीं दिया जा सकता जब तक कि हमारी जमाअत के समस्त लोग चाहे बच्चे हों या नौजवान हों या बूढ़े हों अपनी अंदरूनी तंज़ीम को मुकम्मल नहीं कर लेते और इस लाहे अमल के अनुसार दिन और रात कर्म नहीं करते जो उनके लिए चुना गया है।"

(तारीख़ अन्सारुल्लाह भारत भारत विभाजन के बाद : पृष्ठ 22)

मज्लिस अन्सारुल्लाह उडीशा के सालाना इज्तिमा 1982 ई के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला अपने पैग़ाम में फ़रमाते हैं

"इज्तिमा का उद्देश्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा सारी मानव जाति को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे जमा करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी ज़िंदगियों में परिवर्तन लाना होगा समस्त बुराईयों को छोड़कर हमें इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार अपनी ज़िंदगियां गुज़ारने की ज़रूरत है।"

(तारीख़ अन्सारुल्लाह भारत भारत विभाजन के बाद : पृष्ठ194)

सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसार अल्लाह भारत1988 ई के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह तआला अपने पैग़ाम में फ़रमाते हैं

"ज़माना के मामूर के पैग़ाम के प्रकाशन के एतबार से रसूल के स्थान कादियान को विशेष रूप से और हिन्दुस्तान के दूसरे स्थानों को आम तौर पर एक विशेष महत्तव प्राप्त है। शायद उन्हें तो उन इलमी

तथा दीनी मज्लिसों की यादें न भूली हों जिनकी तरह मुस्लेह अक़्वाम आलिम हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस लिए डाली थी कि... ताकि दुनिया को अख़लाक़ी और एतिक़ादी और इलमी और अमली सच्चाई की तरफ़ खींचा जाए। और समस्त क़ौमों पर इस्लाम की सच्चाई की तर्क से सम्पूर्ण रूप से पूरी करें और ईमानी नूर को समस्त क़ौमों के तय्यार दिलों को दें... घर-घर सच्चाई का पैग़ाम पहुंचाएं।"

(तारीख़ अन्सारुल्लाह भारत भारत विभाजन के बाद : पृष्ठ 210)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"तब्लीग़ के बारे में ज़ेली तन्ज़ीमों और जमाअत के निज़ाम को विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूं कि .. केवल अपने रिवायती तब्लीग़ के जो तरीके हैं,उसी पर भरोसा न करें और बैठ न जाएं कि बस हम जो कर रहे हैं वह काफ़ी है हमारे लिए ,बल्कि तब्लीग़ के लिए नए नए रास्ते तलाश करें,नए नए तरीक़ तलाश करें। इस्लाम का अधिक से अधिक परिचय करवाएं।"

(ख़ुत्बा जुम्म: 1 नवम्बर 2013 ई)

अहमदियत के ख़लीफा हमेशा धर्म के तब्लीग़ की तरफ़ ध्यान दिलाते रहे हैं। दुआ है कि अल्लाह तआला हम समस्त अन्सार भाईयों को इस ज़िम्मेदारी की अदायगी के लिए तत्पर रह कर अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

नई ज़िन्दगी से मिलाने वाला अन्सारुल्लाह का केन्द्रीय सालाना इज्तिमा

इस साल सालाना इजतिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के आयोजन की आज्ञा प्रदान फ़रमाते हुए सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इरशाद फ़रमाया है कि क़रीबी शहरों से अन्सार को बुलाएं और बाक़ी ऑनलाइन कर लें। अल्हम्दुलिल्ला। हुज़ूर अनवर की आदेश के अनुसार इस साल अल्लाह तआला की तरफ झुकते हुए,दुआओं और ज़िक्र इलाही के ज़िन्दगी प्रदान करने वाले माहौन में 41 वां सालाना इज्तिमा 22 से 24 अक्तूबर की तारीख़ों में अपनी विशेष रिवायतों के साथ कादियान दारुल अमान में आयोजित होने वाला है।

सय्यदना हुज़ूर अनवर की दूर अंदेशी से इस साल जलसा सालाना बर्तानिया कोविड की पाबंदियों के साथ आयोजित हुआ। फिर हम सब ने देखा कि इस जलसा के महान तर्बीयती,तब्लीग़ी परिणाम प्रकट हुए। हुज़ूर अनवर की तरफ़ से इज्तिमा के आयोजन की आज्ञा मिलने से इज्तिमा के महत्तव का पता चलता है। आरम्भ से ही इज्तिमा में शामिल होने के लिए ख़ुलफ़ाए किराम विशेष ध्यान दिलाते रहे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं

"हर जमाअत की नुमाइंदगी अपने अपने इजतिमा में होनी चाहिए। इस की ज़िम्मेदारी एक तो ख़ुद उन तन्ज़ीमों पर है। लेकिन इस के इलावा समस्त ज़िलों के उमरा की मैं ज़िम्मेदारी लगाता हूँ और समस्त ज़िलों में काम करने वाले मुरब्बियों और मुअल्लिमों की यह ज़िम्मेदारी लगाता हूँ कि वे गावं गावं, बस्ती बस्ती जा कर, जा कर, एक बार नहीं, जाते रह कर उन को तैयार करें कि कोई गावं या क़स्बा जो है या शहर जो है, वह वंचित न रहे।"

(दैनिक अलफ़ज़ल रब्वह 4 अक्तूबर 1981 ई पृष्ठ 3-6)

सालाना इज्तिमाओं में मज्लिस की साल भर की कार-गुज़ारी रिपोर्ट पेश की जाती है। इज्तिमा के अवसर पर मज्लिस शूरा का आयोजन होता है। जिससे मज्लिसों को अपनी कमियों का ज्ञान होता है और दूसरी मज्लिस की ख़ूबियां सुनकर एक नई रूह और नई ज़िन्दगी पैदा होती हैं। चूँकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जमाअत के निज़ाम को बेदार रखने के लिए ज़ैली तन्ज़ीमों की स्थापना फ़रमाई है। आप रज़ि फरमाते हैं।

"मैं समझता हूँ अगर अवाम तथा हुक्काम दोनों अपने अपने फ़र्ज़ों को समझें तो जमाअत की तरक़्क़ी के लिए ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से यह एक बहुत ही लाभदायक और ख़ुश करने वाली कार्य प्रणाली होगी। अगर एक तरफ़ नज़ारतें जो निज़ाम की क़ाइम मक़ाम हैं अवाम को बेदार करती रहें और दूसरी तरफ़ ख़ुद्दामुल अहमदिया और अन्सारुल्लाह और लज्ना इमा उल्लाह जो अवाम के क़ाइम मक़ाम हैं, निज़ाम को बेदार करते रहें। तो कोई कारण नज़र नहीं आता कि किसी समय जमाअत सम्पूर्ण रूप से गिर जाए और इस का क़दम तरक़्क़ी की तरफ़ उठने से रुक जाए।"(अलफ़ज़ल

17 नवम्बर 1943 ई)

अत: जो मज्लिसें ऑनलाइन शामिल हो रही हैं , उन्हें चाहिए कि इज्तिमा के समस्त प्रोग्रामों से भरपूर लाभ उठाएं। इस के लिए दुआएं करते रहें और पूरी मेहनत से काम करें। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमाहुल्लाह फ़रमाते हैं

"सबसे काम करने वाला और प्रभावित करने वाला हथियार, हथियार जो एक मुस्लमान को दिया गया वह एटम-बम नहीं, दुआ का हथियार है और इस से ज़्यादा कम करने वाला दूसरा हथियार नहीं। और दूसरे नम्बर पर जो हथियार दिया गया वह हाईड्रोजन बम का हथियार नहीं बल्कि मुहब्बत और दया, निस्वार्थ सेवा''

(अलफ़ज़ल रब्वह 11 मार्च 1982 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अलहमदु लिल्लाह कि आप धार्मिक और रुहानी इज्तिमा के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। अल्लाह इस इज्तिमा को बहुत बरकत वाला बनाए और आपके दिल नूरूं और बरकतों से भर दे। इन दिनों में अपने अंदर नेक और पवित्र तबदीली पैदा करने की कोशिश करें और अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त ज़िक्रे इलाही में गुज़ारें।।

(तारीख़ अन्सारुल्लाह भारत भारत विभाजन के बाद : पृष्ठ 210)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इस इज्तिमा की समस्त बरकतों और उत्तम परिणामों से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

अन्सारुल्लाह भारत के सदस्यों से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के आशाएं , सालाना इज्तिमा भारत के पैग़ामों की रोशनी में

अब्दुल मोमिन राशिद, नायब सदर अव्वल मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्तेहिल अज़ीज का सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2003 ई के मौक़ा पर अन्सारुल्लाह भारत के सदस्यों के नाम अपने पैग़ाम में फ़रमाते हैं

"अल्हम्दुलिल्लाह कि आप धार्मिक और रुहानी इज्तिमा के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। अल्लाह इस इज्तिमा को बहुत बरकत वाला बनाए और आप के दिल नूरूं तथा बरकतों से भर दे। इन दिनों में अपने अंदर नेक और पवित्र तबदीली पैदा करने की कोशिश करें और अपना ज़्यादा से ज़ायादा वक़्त ज़िक्रे इलाही में व्यतीत करें।

इस अवसर पर आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पाकीज़ा शब्दों में कुछ नसीहें करना चाहता हूँ। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपको उन नसीहतों के अनुसार अपनी ज़िंदगियों में पवित्र तबदीली पैदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"दूसरी शाख़ जो मेरे मिश्न के बारे में है मेरी शिक्षा है शिक्षा का सार यही है कि ख़ुदा को एक साझी रहित समझो और ख़ुदा के बंदों से हमदर्दी करो और नेक-चलन और नेक विचार वाले इन्सान बन जाओ। ऐसे हो जाओ कि कोई फ़साद और शरारत तुम्हारे दिल के नज़दीक न आ सके। झूठ मत बोलो इफ़्तिरा मत करो और ज़बान और हाथ से किसी को कष्ट मत दो और हर एक किस्म के गुनाह से बचते रहो और नफ़सानी भावनाओं से अपने आप को रोके रखो। कोशिश करो कि ताकि तुम पवित्र दिल और बे शर हो जाओ और चाहिए कि सारे इन्सानों की सहानुभूति तुम्हारा नियम हो और अपने हाथों और अपनी ज़बानों और अपने दिल के विचारों को प्रत्येक नापाक मन्सूबा और फ़साद फैलाने वाले तरीक़ों और ख़यानतों से बचाओ। ख़ुदा से डरो और पवित्र दिल से उस की उपासना करो। और ज़ुलम और अत्याचार तथा ग़बन और रिश्वत और हक़ मारने और व्यर्थ की तरफ़दारी से रुके रहो। और बुरी संगत से परहेज़ करो और आँखों को बुरी निगाहों से बचाओ और कानों को ग़ीबत सुनने से सुरक्षित रखो और किसी मज़हब और किसी क़ौम और किसी गिरोह के आदमी को बुराई और नुक़्सान पहुंचाने का इरादा मत करो। और हर एक के लिए सच्ची नसीहत करने वाला बनो और चाहिए कि फ़साद फैलाने वाले लोगों और शरारत करने वालों और बदमाशों और बुरे आचरण वालों को हरगिज़ तुम्हारी मज्लिस में गुज़र न हो। हर एक बदी से बचोगे और हर एक नेकी के प्राप्त करने के लिए कोशिश करो और चाहिए कि तुम्हारे दिल धोखा से पवित्र और तुम्हारे हाथ ज़ुलम से बरी और तुम्हारी आँखें नापाकी से पाक हों और तुम में कभी बदी और बग़ावत का मन्सूबा न होने पाए और चाहिए कि तुम उस ख़ुदा के पहचानने के लिए बहुत कोशिश करो जिसका पाना साक्षात मुक्ति और जिसका मिलना साक्षात सफलता है"

(रुहानी ख़ज़ाइन भाग 14 पृष्ठ 187-188)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्तेहिल अज़ीज भारत ने सालाना इज्तिमा मजलिस अन्सारुल्लाह भारत 2005 ई के अवसर पर अपने पैग़ाम में दुआओं की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं

"मुझे यह कहा गया है कि इस अवसर पर आपको कोई पैग़ाम भिजवाऊं। मेरा पैग़ाम तो यही है कि जिस पर मैं शुरू दिन से ज़ोर देता चला आया हूँ कि हमारे बड़े

बड़े महान कामों की चाबी दुआ ही है। ख़ुदा तआला के फ़ज़ल के दरवाज़े खोलने का पहला स्तर दुआ ही है। दुआ ही हमारा हथियार है। इस के सिवा और कोई और हथियार हमारे पास नहीं है।

...अभी कुछ दिनों तक रमज़ान भी शुरू होने वाला है इस महीने का भी दुआओं के साथ गहरा सम्बन्ध है। अत: आप समस्त अन्सार बड़े भी और नौमुबाईन भी दुआओं पर ज़ोर दें। दुआओं से अपने मौला को राज़ी करें। और इसी से मदद के इच्छुक हों।... अल्लाह तआला आप सब को दुआ का हक़ीक़ी इर्फ़ान प्रदान फ़रमाए। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्रेहिल ने अज़ीज सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2007 ई के अवसर पर अपने पैग़ाम में नमाज़ की अदायगी और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं

"इस अवसर पर मैं आप को दो बातों की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

पहली बात नमाज़ की अदायगी है। अल्लाह तआला ने इन्सान की पैदाइश का उद्देश्य इबादत रखा है और रोज़ाना पाँच वक़्त बाक़ायदगी के साथ नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है। क़ुरआन-ए-करीम और हदीसों में नमाज़ की अदायगी पर बहुत ज़ोर दिया गया है इस के लाभ , बरकतें , महत्व और फ़र्ज़ीयत भी वर्णन किया गया है। हज़रत नबी करीम (स) का पवित्र नमूना भी यही बताता है कि नमाज़ कितनी ज़रूरी है। हदीसों में आता है कि आपका अपनी आख़री बीमारी में भी सिर्फ और सिर्फ नमाज़ ही की तरफ़ ध्यान था। आपको सहाबा सहारा देकर मस्जिद में लाते लेकिन सख़्त कमज़ोरी की हालत में भी आपने नमाज़ में सुस्ती न की।

.....अत: ख़ुद भी नमाज़ की पाबन्दी करें और अपनी औलाद को भी इस की शिक्षा देते चले जाएं। दूसरी ज़रूरी बात तिलावत क़ुरआन-ए-करीम है। अभी रमज़ान के पाकीज़ा माहौल का हम सबने तजुर्बा किया है। एक ऐसे रुहानी मौसम से गुज़रे हैं कि जिसमें हर तरफ़ से क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत की आवाज़ें सुनाई देती हैं। बच्चे बड़े सब जिन्हें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना आता है यह कोशिश करते हैं कि उन्हें इस महीने में क़ुरआन-ए-करीम का दौर करने की तौफ़ीक़ मिले। जगह जगह अनुवाद की क्लासें और दरसों का प्रबन्ध किया जाता है। अब इस पाकीज़ा रुहानी प्रैक्टिस को छोड़ नहीं देना बल्कि उसे अपनी ज़िन्दगी का स्थायी हिस्सा बना लेना चाहिए। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि लोगों में से कुछ लोग अल्लाह वाले होते हैं निवेदन किया गया :हे अल्लाह के रसूल अल्लाह वे कौन लोग हैं । फ़रमाया क़ुरआन वाले अल्लाह वाले और अल्लाह के विशेष बंदे होते हैं।"

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्रेहिल अज़ीज ने सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2011 ई के अवसर पर अपने पैग़ाम में कादियान की तो पहचान दुआएं क़रार देते हुए दुआओं की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं

"दुआओं पर ज़ोर दें। इज्तिमा के दिनों में भी ज़िक्र इलाही और दुआएं करते रहें और फिर उस नेक आदत को अपनी ज़िंदगियों का स्थायी हिस्सा बना लें। कादियान की तो पहचान दुआएं हैं। इस लिए इस पहचान को अपनी ज़िन्दा रखें। भारत की बाक़ी मज्लिसों के अन्सार भी दुआओं को अपनी आदत बना लें अपने बच्चों में भी बचपन से दुआओं का शऊर उजागर करें। अगर आप दुआ करने वाले हैं और आपकी औलादें दुआओं के महत्तव को समझ जाएं तो आप की अगली नस्लों की बेहतरीन तर्बीयत के सामान हो जाएंगे। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का उद्देश्य था कि दुनिया अपने सृष्टा के क़रीब आ जाए और हर मुश्किल और सुवधिाओं में इन के ध्यान का केन्द्र ख़ुदा तआला की ज़ात हो।"

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस

अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्रेहिल अज़ीज ने सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2015 ई के मौक़ा पर अपने पैग़ाम में धर्म की सेवा को ख़ुदा का फ़ज़ल समझने और इस से हार्दिक सन्तोष प्राप्त होने के बारे में फ़रमाते हैं

"पहली नसीहत तो यही है कि धर्म के अनसार बनें। जो सेवा आपके सपुर्द की जाए उस को ख़ुदा का फ़ज़ल समझें और उसे बेहतरीन रंग में करने की कोशिश करें। सिलसिला के कामों से आपको कलबी सन्तोष नसीब होगा। आपकी रुहानी तरक़्क़ी के सामान होंगे और आपके नमूना को देखकर आपकी औलाद को भी नेक कामों को करने की तरग़ीब मिलेगी और उनके अन्दर धर्म की सेवा का शौक़ और भावना पैदा होगी।

इसी तरह तब्लीग़ का काम बहुत प्रमुख और व्यापक काम है। कुछ राबते बना कर सन्तुष्ट हो जाना और कुछ लोगों तक फोल्डरज़ वितरित कर लेना ही काफ़ी नहीं है। अपने सम्पर्क बढ़ाएं। लोगोंको जमाअत की किताबें वेबसाइट और एम टी ए से परिचित कराएं। हमारा काम सारी दुनिया तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं और आस्थायों का प्रचार प्रसार करना है।

अत: ईमान की वह दौलत जो केवल अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से आप को प्रदान की है उस को सारी मानव जाति तक फैलाने के लिए ठोस उपायों की ज़रूरत है। इस लिए अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें। हाथ पर हाथ रख कर न बैठें और अहमदियत का पैग़ाम सक्रिय रूप से फैलाने के लिए हंगानी बुनीयादों पर काम करें।

फिर एक ज़रूरी नसीहत यह है कि अपने नस्लों और बच्चों की शिक्षा तथा तरबियत का तरफ विशेष ध्यान दें। इस युग में जो टी वी, इन्ट्रनेट फोन इत्यादि नए अविष्कार हुए हैं। इस में कोई शक नहीं कि इस के लाभ भी हैं और इन से इल्मी उन्नति भी हुई है। परन्तु यह भी एक वास्तविकता है कि इन चीज़ों ने लोगों की व्यस्तता और रुझान को एक दम बदल दिया है और इस के साथ साथ समय का नष्ट करना भी है। इसलिए अपने बच्चों की व्यस्तता पर नज़र रखें। और उन्हें प्यार से समझाते रहें। उन्हीं धर्म की शिक्षाओं के अधीन रह कर जीवन व्यतीत करने की नसीहत करते रहें।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्रेहिल अज़ीज सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2019 ई के अवसर पर अपने पैग़ाम मैं ख़ुद को भी और अपने घर वालों को एमटी ए से जोड़ने की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला ने इस ज़माने में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ और अपने निहायत प्यारे वजूद मसीह तथा महदी को भेजा फिर उन के उत्तराधिकारी के रूप में स्थायी खलीफ़ा का सिलसिला भी जारी फ़रमाया। अब तक़्वा में तरक़्क़ी वही करेंगे जो ख़िलाफ़त के निज़ाम से जुड़े रहेंगे। उन्हीं को गुनाहों से नजात मिलेगी जो ख़िलाफ़त से मुहब्बत और आज्ञापालन में तरक़्क़ी करते रहेंगे। देखें यह अल्लाह तआला का कितना बड़ा उपकार है कि उसने समय के ख़लीफ़ा के क़रीब होने के लिए एम टी ए का माध्यम भी प्रदान फ़रमाया है। आप सारे ख़ुतबा जुम्अ और विभिन्न अवसरों के ख़ुत्बे सीधा सुन सकते हैं। इस लिए ख़ुद भी और अपने घर वालों को एम टी ए से जोड़ें और जो नेक बातें सुनें उन पर अनुकरण करने की कोशिश करें ताकि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने जो चाहा है कि मसीह मौऊद के द्वारा अन्य धर्मों पर इस्लाम का प्रभुत्व हो और सब दुनिया एक वजूद की तरह हो जाएगी आप भी इसी एकता की लड़ी में पिरोए रहें।"

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें सय्यदना हुज़ूर अनवर की समस्त हिदायतों पर दिल की गहराई से अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

.....